उनसे जुड़े रहें

कमलेश.डी.पटेल

रविवार के दिन सत्संग के बाद दी गई वार्ता

29 मार्च 2015, चेन्नई, भारत

नमस्ते,

हमारे पूज्य मालिक ने प्रति वर्ष इन तीन भण्डारों की स्वीकृति दी थी : पूज्य लालाजी महाराज, पूज्य बाबूजी महाराज और हमारे मालिक का जन्मदिन। अपने हृदय में तो हम सभी इन अवसरों को मनाने के लिये तैयार रहते हैं, परन्तु कई सांसारिक कारणों से यह संभव नहीं हो पाता। किसी को भी भण्डारा अथवा ऐसे उत्सवों में सत्संग में शामिल न हो पाने पर स्वयं को दोषी नहीं मानना चाहिये। यदि संभव हो तो अपने घर पर ही मना लें। यदि आप नहीं जा पाते तो कृपया अपना दिल छोटा न करें। आप हृदय से उस उत्सव में ही हैं। सिर्फ़ इसलिये कि आपके पति अथवा पत्नी या आपके माता-पिता को आपका जाना पसन्द नहीं है या आपकी आर्थिक स्थिति या काम का वातावरण ऐसा है कि आप नहीं जा सकते तो अपना मन दु:खी न करें। वजह चाहे कोई भी हो, कृपया ख़ुद को विवश न करें। सभी भण्डारों में शामिल होना हर किसी के लिये संभव नहीं होता।

हम जहाँ कही भी हैं, मालिक को वहीं आमंत्रित कर सकते हैं, यदि हम दिल की गहराई से प्रार्थना करें, ''प्रिय मालिक, मैं यह तो नहीं कहूँगा कि मेरी परिस्थितियाँ कितनी ख़राब हैं, परन्तु चलिये हम यहीं और अभी इसे मना लेते हैं।'' दिल से इसके लिये विनती करने पर, याचना करने पर, हमारे सभी मालिक अपने पूरे प्रभाव के साथ वहाँ मौजूद होते हैं। इसीलिये चाहे यह कोई सा भी भण्डारा हो, हमें अपने दिलों को उनसे जुड़े रहने के लिये तैयार करना होगा, क्योंकि भण्डारे में पहुँच पाना तो बहुत ही छोटा सा लक्ष्य है, बहुत ही छोटी सी आकाँक्षा है। आदर्श स्थिति अपने सभी मालिक से निरन्तर जुड़े रहने की होनी चाहिये। जिस प्रकार हम सुबह ध्यान करते हैं और उसके बाद हम दिन भर ध्यान की स्थिति में चले जाते हैं - जिसे हम ध्यानस्थ स्थिति कहते हैं, इसी प्रकार भण्डारे साल मे तीन बार हो सकते हैं, परन्तु उत्सव निरन्तर चलते रहना चाहिये। इसका तात्पर्य है मालिक के प्रति

कृतज्ञ रहना – कि उन्होंने हमारे जीवन का मार्गदर्शन वैसा किया है जैसा वे हमारे लिये चाहते थे। जैसे-जैसे यह प्रकट होता जाता है, हमारी कृतज्ञता बनी रहती हैं।

सहज मार्ग की एक बड़ी महान विशेषता है – कि अपनी मृत्यु के बाद हम दिव्य लोक (*ब्राइटर वर्ल्ड*) में जाने की प्रतीक्षा न करें। यह कोई भौतिक संसार नहीं है, यह केवल एक आयाम है, और इसका सृजन हम अपने दिल में कर सकते हैं और वहीं इसकी अनुभूति भी हो सकती है। दशा ऐसी होनी चाहिये कि इस लोक और उस लोक में कोई फ़र्क़ न हो। मुझे बाबूजी की आत्मकथा से एक अनुच्छेद याद आता है, जहाँ लालाजी उनसे कहते हैं, ''मैंने तुम्हारे लिये *ब्राइटर वर्ल्ड* का भी त्याग कर दिया है। तुम्हारा हृदय अब मेरा निवास-स्थान बन गया है। अब से मैं *ब्राइटर वर्ल्ड* नहीं जाऊँगा।'' कल्पना कीजिये बाबूजी के हृदय की गुणवत्ता क्या रही होगी। और उन्होंने वायदा किया है, उनका आश्वासन है कि हम सभी ऐसी स्थिति का सृजन कर सकते हैं जहाँ यह हृदय *ब्राइटर वर्ल्ड* बन सकता है – **यहीं और अभी**। तब हर दिन उत्सव है।

तो मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि इसी प्रकार से तैयारी करें। जैसा मैं बार-बार कहता हूँ हमारे गुरुओं की मदद उपलब्ध है। हम सदा ही माँगते रहते हैं, ''मालिक! मालिक मुझे आशीर्वाद दें। कृपया मुझे इसका आशीष दें,'' ''कृपया मुझे उसका आशीष दें।'' ऐसी घृणित माँगे करना बंद कीजिये। माँगना है तो उस उच्चतर वस्तु की माँग कीजिये, जिसे पाने के बाद जीवन में किसी और चीज़ की ज़रूरत ही न रहे।

भण्डारों की बात करते हुए, इस बार बाबूजी महाराज का जन्मोत्सव लखनऊ में होगा। पिछले कई सालों से हम देखते हैं कि लोग भण्डारों में कई चीज़ों के लिये लालायित रहते हैं। कई व्यावसायिक सौदे चलते हैं, रिश्ते जोड़े जाते हैं और हममें से कुछ लोग मालिक की कॉटेज के बाहर भीड़ लगाये रखते हैं, मानो वही एक मात्र जगह है जहाँ आपको कृपा और प्राणाहुति मिल सकती है। और इस प्रक्रिया में मानो हम सम्पूर्ण गुरु परम्परा का अपमान करते हैं : ''मैं वहाँ अंदर नहीं जा पा रहा हूँ। मुझे प्राणाहुति नहीं मिल रही है। यह कुछ विशेष सैभाग्यशाली लोगों के लिये ही है।'' इस मिशन में विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति कोई नहीं है। वे लाइन में खड़े होकर किसी प्रकार **उनकी** बैठक या **उनके** शयन कक्ष तक पहुँच जाने में क़ामयाब हो जाते हैं। लेकिन मैं बार-बार कहता हूँ, आप भले ही मालिक के बिलकुल नज़दीक पहुँच जाएँ परन्तु जब तक आपका दिल आंतरिक रूप से तैयार न हुआ हो आप असली चीज़ कभी नहीं पा सकते। और यदि आपका दिल आंतरिक रूप से तैयार है, तो आप उनसे हज़ारों मील दूर होने पर भी उसे पा सकते हैं।

इसलिये कृपया इन भण्डारों को **उनके** स्मरण रूपी अविरल प्रेम की गहराई से डूबकर और वहीं बने रहने और उन्हीं में पिघल जाने के सुअवसर की तरह इस्तेमाल करें। मैं आपसे बस इतना ही आग्रह करता हूँ। कृपया कॉटेज के चारों ओर मँडराकर जीवन के छोटे-छोटे लक्ष्यों को पाने की कोशिश में ऐसे भण्डारों के माहौल को न बिगाड़ें।

आप सबका धन्यवाद।